वर्तिका नंदा की चार कविताएं

वर्तिका नंदा कवयित्री के साथ मीडिया यात्री भी हैं। अनेक विचारोत्तेजक विषयों पर लिखी गयी उनकी टिप्पणियों ने नये मुद्दे उठाये हैं।

खुशामदीद

पीएम की बेटी ने
किताब लिखी है
वो जो पिछली गली में रहती है
उसने खोल ली है अब सूट सिलने की दुकान
और वो जो रोज बस में मिलती है
उसने जेएनयू में एमफिल में पा लिया है एडमिशन।
पिता हलवाई हैं और
उनकी आंखों में अब खिल आयी है चमक।

बेटियां गढ़ती ही हैं।
पथरीली पगडंडियां
उन्हें भटकने कहां देंगीं!
पांव में किसी ब्रांड का जूता होगा

www.tadbhav.com

तभी तो मचायेंगी हंगामा बेवजह।
बिना जूतों के चलने वाली ये लड़कियां
अपने फटे दुपट्टे कब सी लेती हैं
और कब पी लेती हैं
दर्द का जहर
खबर नहीं होती।

ये लड़कियां बड़ी आगे चली जाती हैं

ये लड़कियां चाहे पीएम की हों
या पूरचंद हलवाई की
ये खिलती ही तब हैं
जब जमाना इन्हें कूड़ेदान के पास फेंक आता है
ये शगुन है
कि आने वाली है गुड न्यूज।

बहूरानी

बड़े घर की बहू को कार से उतरते देखा
और फिर देखीं अपनी
पांव की बिवाइयां
फटी जुराब से ढकी हुईं
एक बात तो मिलती थी फिर भी उन दोनों में–
दोनों की आंखों के पोर गीले थे

पैदाइश

फलसफा सिर्फ इतना ही है कि
असीम नफरत
असीम पीड़ा या
असीम प्रेम से
निकलती है
गोली, गाली या फिर
कविता

www.tadbhav.com

गजब है

बात में दहशत
बेबात में भी दहशत
कुछ हो शहर में, तो भी
कुछ न हो तो भी
चैन न दिन में
न रैन में।

मौसम गुनगुनाये तो भी
बरसाये तो भी
शहनाई हो तो भी
न हो तो भी
हंसी आये मस्त तो भी
बेहंसी में भी

गजब ही है भाई
न्यूजरूम!

www.tadbhav.com